भेड़ और बकरियों के प्रमुख विषाणु जनित रोग

डा० ए० के० उपाध्याय

पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक विभाग़ पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर. **263145**

छोटे रोमंथी पशुओं का प्लेग : पी.पी.आर.

भारत में सर्वप्रथम 1989 में पहचाना गया यह रोग बकरियों व भेड़ों का अति संक्रामक रोग है जो दस्त और निमोनिया उत्पन्न करता है। जिससे अत्यधिक संख्या में पशु रुग्ण होकर मर जाते हैं।

रोग का कारण

रोग का कारण 'पैरामिक्सोविरिडी' कुल के 'मार्बिलीवायरस' वंश का विषाणु है। इस विषाणु की गोवंश के पोंकनी रोग विषाणु से प्रतिजनिक समानतायें हैं। अधिकांश विसंक्रामकों और सूर्य की किरणों द्वारा यह आसानी से नष्ट हो जाता है।

रोग के लक्षण

रोग के लक्षणों में अत्यधिक मात्रा में पतले दस्त और निमोनिया हैं। मुँह के अन्दर व्रण, और सूजन दिखते हैं। ये घाव विशेषतयाः मसूड़े और दाँत के मिलान के स्थान पर होते हैं। ऐसे ही रक्त रिसने वाले शोथ आमाशय और आँतों में भी मिलते हैं जो जेब्रा की त्वचा जैसे धारीदार होते हैं। पशुओं में निमोनिया भी हो जाता है। साँस लेने में कठिनाई तथा दस्त के कारण शरीर में पानी की कमी होने से पशु मर जाता है।

रोग का निदान

उपरोक्त लक्षणों और अत्यधिक संख्या में पशुओं की मृत्यु होने से पी.पी.आर. का संदेह हो सकता है। चूँकि यह तेजी से फैलने वाला रोग है, इसकी तुरन्त जाँच किया जाना आवश्यक है। जाँच के लिए रूई की फुरेरी में मुँह, नासिका और गुदा से लिये गये नमूने, रक्त, सीरम आदि को बर्फ पर रखकर प्रयोगशाला में भेजा जाना आवश्यक है। इनके अलावा मरे पशुओं की आँतों, तिल्ली, लसीका ग्रंथि, फेफड़े के टुकड़े उपयुक्त संवर्ध में डालकर बर्फ में रखकर भेजना चाहिए। पशु चिकित्साधिकारी की सहायता से शीघ्र निदान हेतु तत्परता बरतना चाहिए अन्यथा रोकथाम के अभाव में रोग फैलने और अधिक संख्या में पशुओं के मरने का डर बना रहता है।

रोग के उपचार व रोकथाम के तरीके

रोग की अति उग्र अवस्था में उपचार प्रभावी नहीं हो पाता। रोग प्रारंभ होते ही पशु चिकित्साधिकारी की सहायता से उपचार शुरू कर देना चाहिये। रोगी पशुओं के क्षेत्र के चारों ओर के पशुओं में भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर द्वारा विकसित पी.पी.आर. के टीके का टीकाकारण करा देना चाहिए।

नीलर्सना (ब्लूटंग) रोग

यह एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है जो वर्षा ऋतु में क्यूलीक्वायडीज मच्छरों के कारण अधिक फैलता है। इस रोग से मुख्यतया भेड़ें प्रभावित होती हैं तथा इनमें मृत्यु दर से व्यापक आर्थिक हानि होती है।

रोग का कारण

रीओविरिडी परिवार के आर्बीवायरस वंश के 24 प्रकार के विषाणु नीलर्सना रोग उत्पन्न करते हैं। इनमें से 21 प्रकार के विषाणुओं की भारत में उपस्थिति पायी गयी है।

रोग का प्रसार

क्यूलीक्वायडीज नामक मच्छरों के काटने से रोग के विषाणु पशु शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और रोग उत्पन्न करते हैं। मच्छर नमी या कीचड़ भरे स्थानों या गोबर में अण्डे देते और प्रजनन करते हैं।

रोग के लक्षण

तीव्र ज्वर, सुस्ती तथा होंठ, नांक, चेहरा, पलकों और कान में सूजन हो जाती है। आँख, मुँह व नांक के अन्दर लाली और जीभ में सूजन व नीलिमा (नीलर्सना) होती है। त्वचा में सूजन के कारण ऊन टूटने व झड़ने लगती है। खुर की किरीटी पट्टी में सूजन और मांस पेशी में क्षरण के कारण पशु लंगडाने लगता है। मुँह के अन्दर जीभ व गालों पर घाव हो जाते हैं। गर्भवती भेड़ों में गर्भपात हो जाता है।

रोग का निदान

रोग के लक्षणों के आधार पर प्रारम्भिक निदान किया जा सकता है। प्रयोगशाला में रोग नमूने (रक्त) से विषाणु को पृथक करके उसकी पहचान द्वारा अथवा मुर्गी के अंड़ों या कोशिकाओं में सीरमी परीक्षणों जैसे– ए.जी.आई.डी. व एलाइजा द्वारा पुष्टि एवं निदान किया जाता है। पालीमरेज चेन रिएक्शन द्वारा विषाणु के जीनोम की उपस्थिति की जाँच करके भी रोग का निदान किया जाता है।

प्रयोगशाला में निदान हेतु भेजे जाने वाले नमूने

- उच्च शारीरिक तापमान पर हिपेरिन या ई.डी.टी.ए. में एकत्र किया हुआ 5 मि.ली. रक्त
- सीरम (2 मि.ली.) एण्टीबायोटिक या मर्थिओलेट मिलाकर
- तिल्ली व लसीका ग्रंथि (5–10 ग्राम) बर्फ पर
- आंतरिक अंगों के टुकड़े 10 प्रतिशत फार्मेलीन में

रोग के उपचार व रोकथाम के तरीके

रोग का उपचार लक्षणों के आधार पर करना चाहिए। बचाव के लिए देश में टीकों को विकसित करने का कार्य अंतिम चरण में है।

भेड़ शीतला (चेचक)

भेड़ शीतला एक विषाणु जनित तीव्र सांसर्गिक रोग है जिसमें 6 माह से कम आयु के मेमनों में अत्यधिक मृत्युदर होती है और भेड़ पालकों को काफी आर्थिक होती है। तीव्रता में भेड़ शीतला का स्थान मनुष्यों की छोटी शीतला के बाद दूसरे स्थान पर है। यह पशु की त्वचा और ऊन को क्षति पहुँचाता है।

रोग का कारण

भेड़ शीतला का विषाणु 'पाक्सविरिडी' कुल के 'कैप्रीपाक्स वायरस' वंश का सदस्य है जो चेचक की खुरण्ट में कई वर्षो तक बिना नष्ट हुये पड़ा रहता है। विषाणु वातावरण के तापमान पर जीवित रहता है।

रोग के लक्षण

पालतू पशुओं में भेड़ शीतला सर्वाधिक गंभीर रोग है। संक्रमण के 4 से 8 दिनों बाद उच्च ज्वर, सांस दर में बढ़ोत्तरी, पलकों में सूजन, नाक से पानी आना प्रारम्भ होते हैं। तत्पश्चात त्वचा में चेचक के उभार दिखायी देते हैं जो गाँठों और फफोलों में परिवर्तित हो जाते हैं। बिना अथवा कम ऊन वाले शारीरिक भागों जैसे– आँखों के चारों ओर, जाँघ के अन्दरूनी भाग, थन और पूँछ की निचली सतह, कानों पर शीतला की गाँठें अधिक दिखायी देती हैं सामान्यतया ये गाठें खुरण्ट में बदलती हैं जो 3–4 सप्ताह तक बनी रहती है। उनके छूट कर गिरने पर स्थायी चिन्ह बन जाते हैं। पशुओं के श्वास प्रणाल, फेफड़े, गुर्दे और आँतें भी प्रभावित होती है। फेफड़ों में 2 से.मी. तक के अनेक गोली के आकार के कड़े भाग बन जाते है।

रोग का निदान

रोग का प्रारम्भिक निदान लक्षणों के आधार पर तथा चेचक की गाँठों का विश्लेषण करके किया जा सकता है। पुष्ट निदान हेतु त्वचा की गाँठों या खुरण्ट को पशु चिकित्साधिकारी की सहायता से प्रयोगशाला में भेजना चाहिए जहाँ परीक्षण करके रोग का स्पष्ट निदान किया जा सकता है।

रोग से बचाव और नियंत्रण

छोटे मेमनों के उपचार की तुलना में उनकी साफ सफाई अधिक आवश्यक है। संक्रमित वस्तुओं को जला देना चाहिए, शैय्या बदल देनी चाहिए और पशुओं को हल्का आहार देना चाहिए। चेचक के घावों को लाल दवा से धोकर उस पर डाक्टर की सलाह से मलहम लगाना चाहिए। जिस क्षेत्र में रोग प्रकोप की संभावना अधिक हो वहाँ टीकाकरण करना चाहिए।

बकरियों में शीतला भी लगभग उपरोक्त प्रकार से ही होती है। उसका निदान व नियंत्रण उपरोक्त प्रकार से ही करना चाहिए।